REET 2025
LEVEL-1&2
वंदन बैच
संस्कृत
वर्णमाला
LIVE
03-01-2025 03:00 PM

वर्णविचार -

संस्कृत सम् + कृ+ क्त (सुट् का आगम) 'संस्कृत' शब्द का अर्थ है- शुद्ध, परिष्कृत, परिमार्जित, परिनिष्ठित। अतः संस्कृत भाषा का अर्थ है- शुद्ध एवं परिमार्जित भाषा।

व्याकरण - वि + आङ् + कृ + ल्युट्

'व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते अनेन इति व्याकरणम्' जिसके माध्यम से शब्दों की व्युत्पत्ति या निष्पत्ति बतायी जाय, वह व्याकरण है। व्याकरण 'शब्दशास्त्र' या 'पदशास्त्र' है।\

सम् + कृ + क्त

↓ सुट् (struck through) → त

संस्कृत

वि + आङ् + कृ + ल्युट्

(वि + आङ्) ↓ उपसर्ग

(कृ) ↓ धातु

(ल्युट्) ↓ प्रत्यय

त्रिमुनि- संस्कृत व्याकरण के त्रिमुनि हैं-

1. पाणिनि
2. कात्यायन वररुचि
3. पतञ्जलि

अष्टाध्यायी - व्याकरणशास्त्र का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है अष्टाध्यायी जो महर्षि पाणिनि की रचना है।

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

❖ अष्टाध्यायी में 8 अध्याय, प्रत्येक अध्याय में 4-4 पाद है, तो कुल मिलाकर 8×4 = 32 पाद हैं, तथा 3978 अर्थात् लगभग 4000 सूत्र हैं। इसीलिए पाणिनि को 'सूत्रकार' कहा गया है।

❖ अष्टाध्यायी का प्रथम सूत्र 'वृद्धिरादैच्' (1.1.1) तथा अन्तिम सूत्र 'अ अ' (8.4.67) है।

❖ महर्षि कात्यायन या वररुचि ने अष्टाध्यायी के सूत्रों पर वार्तिक लिखा, इसीलिए इन्हें 'वार्तिककार' कहते हैं।

❖ महर्षि पतञ्जलि ने अष्टाध्यायी के 4000 सूत्रों पर एक विस्तृत भाष्य लिखा, जिसे 'महाभाष्य' कहते हैं। इसीलिए व्याकरण शास्त्र के 'भाष्यकार' के रूप में पतञ्जलि प्रसिद्ध हैं।

❖ महाभाष्य में कुल 84 'आह्निक' हैं।

❖ भट्टोजिदीक्षित ने सूत्रों पर वृत्ति लिखी इसीलिए इन्हें 'वृत्तिकार' के नाम से जानते हैं। 'सिद्धान्तकौमुदी' इनकी प्रसिद्ध रचना है।

वरदराज : लघुसिद्धांतकौमुदी

वर्ण विचार

वर्ण अथवा अक्षर हम मुख से जिन ध्वनियों का उच्चारण करते हैं, उन्हें 'वर्ण' अथवा 'अक्षर' कहते हैं। वैसे तो 'न क्षरति इति अक्षरः' ऐसा 'अक्षर' शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है। अर्थात् जिनका क्षरण या विनाश न हो वे अक्षर हैं, जैसे अ, इ, उ, क, ख, ग आदि, परन्तु सामान्यतया 'वर्ण' या 'अक्षर' समानार्थी समझे जाते हैं। वर्ण दो प्रकार के होते हैं-

(i) स्वर और (ii) व्यञ्जन

स्वर (अच्)

स्वर - 'स्वयं राजन्ते इति स्वराः' -

स्वर वे ध्वनियाँ हैं, जिनके उच्चारण के लिए किसी अन्य वर्ण की आवश्यकता नहीं होती। जैसे 'अ' के उच्चारण में किसी अन्य स्वर या व्यञ्जन वर्णों की सहायता नहीं लेनी पड़ती इसीलिए 'अ' स्वर है। इसप्रकार अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ ये सभी स्वर हैं।

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

1. **स्वरों की संख्या-** संस्कृत व्याकरणशास्त्र में स्वरों की संख्या ०९ मानी गयी है। **जैसे** अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ। ये सभी स्वर 'अच्' प्रत्याहार के अन्तर्गत परिगणित हैं इसीलिए स्वरों को 'अच्' भी कहा जाता है।

2. **मूल स्वर-** मूल स्वर 05 हैं। अ, इ, उ, ऋ, लृ यें पाँच मूलस्वर कहे जाते हैं।

3. **संयुक्त स्वर** ए, ओ, ऐ, औ ये 4 संयुक्त या मिश्रित स्वर कहे जाते हैं।

जैसे

अ+इ = ए

अ +उ =ओ

अ + ए = ऐ

अ +ओ = औ

नोट- **ऊकालोऽज्झस्वदीर्घप्लुतः** सूत्र से एकमात्रिक, द्विमात्रिक तथा त्रिमात्रिक स्वरों की क्रमशः ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत संज्ञा होती है।

स्वरों के भेद स्वरों के मुख्यतया तीन भेद हैं-

1. ह्रस्व स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगे, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं-

जैसे अ, इ, उ, ऋ, ऌ ये सभी ह्रस्व स्वर हैं।

2. दीर्घ स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा का समय लगे, वे दीर्घस्वर कहे जाते हैं-

जैसे आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ, ऐ, औ।

3. प्लुत स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा से अधिक अर्थात् तीन मात्रा का समय लगे इन्हें प्लुतस्वर कहते हैं। प्लुतस्वरों की पहचान के लिए '३' यह चिह्न लगाया जाता है।

जैसे- अ-३, इ-३, उ-३ आदि।

'ओ३म्'- यह स्वर त्रैमात्रिक है, जिसका प्रयोग प्रायः वेदों में होता है। यहाँ 'ओ' प्लुतस्वर है।

- ❖ अ इ उ ऋ प्रत्येक वर्ण के 18 भेद होते हैं।
- ❖ ऌ, ए, ओ ऐ औ के 12 भेद होते हैं।
- ❖ ऋ एवं ऌ के कुल 30 भेद होते हैं।

सवर्ण संज्ञा

18 + 12

वर्णों का उच्चारण काल

एकमात्रो भवेत् ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनं चार्धमात्रिकम्॥

अर्थात्- ह्रस्व स्वर की एकमात्रा, दीर्घस्वर की दो मात्रा एवं प्लुत स्वरों को त्रिमात्रिक समझना चाहिए। व्यञ्जन वर्षों की आधी मात्रा जाननी चाहिए।

एकमात्रिक स्वर अ, इ, उ, ऋ, ऌ (ह्रस्व स्वर)।

द्विमात्रिक स्वर आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ, ऐ, औ (दीर्घ स्वर)

त्रिमात्रिक स्वर- अ-३, इ-३, उ-३, २-३ आदि। (प्लुत स्वर)

अर्द्धमात्रिक वर्ण- क् ख्ग घ्ङ् च्छ ज् (सभी व्यञ्जनवर्ण)।

मात्राकाल- पलक झपकने के समय को एकमात्राकाल कहते हैं।

व्यञ्जन (हल् वर्ण)

व्यञ्जन- 'अन्वम् भवति व्यञ्जनम्

व्यञ्जन वे वर्ण हैं, जो स्वतन्त्र रूप से न बोले जा सकें; अर्थात् जिनका उच्चारण स्वर की सहायता के बिना नहीं हो सकता

जैसे-

क् + अ = क

ख् + अ = ख

ग् + अ = ग आदि।

क् + अ = क

क् + इ = कि

क् + उ = कु

व्यञ्जन के प्रकार- मुख्यरूप से व्यञ्जन के तीन प्रकार होते, हैं, जो माहेश्वरसूत्रों में गिने गये हैं।

1. स्पर्श व्यञ्जन
2. अन्त:स्थ व्यञ्जन
3. ऊष्म व्यञ्जन।

चतुर्थ प्रकार है 4. संयुक्त व्यञ्जन (जो माहेश्वर सूत्रों में परिगणित नहीं है)

(i) स्पर्श व्यञ्जन- जिन वर्णों के उच्चारण में मुख के विभिन्न अवयवों (भागों) कण्ठ, तालु, मूर्धा आदि का स्पर्श होता है; उन्हें स्पर्श व्यञ्जन कहते हैं। इसकी संख्या 25 होती है

व्यञ्जन (हल्)

- स्पर्श (25)
  (क् से म्)
  - क् ख् ग् घ् ङ्
  - च् छ् ज् झ् ञ्
  - ट् ठ् ड् ढ् ण्
  - त् थ् द् ध् न्
  - प् फ् ब् भ् म्
- अंतःस्थ (4)
  यण्
  ↓
  य् व् र् ल्
- ऊष्म वर्ण (4)
  शल्
  ↓
  श् ष् स् ह्

क से लेकर म तक के वर्ण स्पर्श व्यञ्जन हैं। ये वर्ण कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त आदि स्थानों को स्पर्श करने के बाद उच्चरित होते हैं इसीलिए 'स्पर्श' हैं।

'कादयो मावसानाः स्पर्शाः'

क् आदयो म् अवसाने

क वर्ग- क् ख् ग् घ्ङ्

च वर्ग- च् छ ज झ ञ्

ट वर्ग - ट्व् ड् ढ् ण्

त वर्ग- त् थ् द्य् न्

प वर्ग- प् फ् ब्भ् म्

इसप्रकार कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग कुल पाँच वर्ग होते हैं, तथा प्रत्येक वर्ग के अन्तर्गत 5-5 वर्ण आते हैं अतः 5×5 = 25 वर्ण वर्गाक्षर या वर्गीय व्यञ्जन, या स्पर्श व्यञ्जन कहे जाते हैं।

उदित्- 'कु चुटु तुपु एते उदितः। इन्ही पाँच वर्गों का लघुनाम या दूसरा नाम कुचुटु तु पु भी है। इनमें 'उ' की इत् संज्ञा होती है, अतः ये उदित् कहलाते हैं।

संस्कृत व्याकरण में जब भी 'कु' कहा जाएगा तो उस का अर्थ होगा कवर्ग अर्थात् क ख ग घ ङ।

'चु' का मतलब चवर्ग अर्थात् च् छ ज झ ञ्।

टु' का अर्थ होगा टवर्ग अर्थात् ट् दड् दण्

तु' का अर्थ है तवर्ग अर्थात् त् थ् दृछन्।

पु' का अर्थ है- पवर्ग अर्थात् प् फ् व् भ् म्।

जैसे-

(ii) अन्त:स्थ व्यञ्जन 'यणोऽन्त:स्था:' यण् प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले य् व्र् ल् ये चार वर्ण अन्त:स्थ व्यञ्जन कहे जाते हैं। इन्हीं वर्णों को 'अर्धस्वर' भी कहा जाता है।

(iii) ऊष्म व्यञ्जन 'शल ऊष्माण:' शल् प्रत्याहार के अन्तर्गत परिगणित श् ष् स् ये चार वर्ण ऊष्म व्यञ्जन कहे जाते हैं।

(iv) मिश्रित या संयुक्त व्यञ्जन दो व्यञ्जन वर्णों के मेल से जो वर्ण बनते हैं उन्हें संयुक्त या मिश्रित व्यञ्जन कहते हैं।

जैसे-

क् + ष् + अ = क्ष

त् + र् + अ = त्र

ज् + ञ् + अ =

❖ राजन्, आत्मन् आदि नकारान्त हैं, मनस्, पयस्, यशस् आदि सकारान्त शब्द हैं, सरित्, जगत् आदि तकारान्त शब्द हैं।

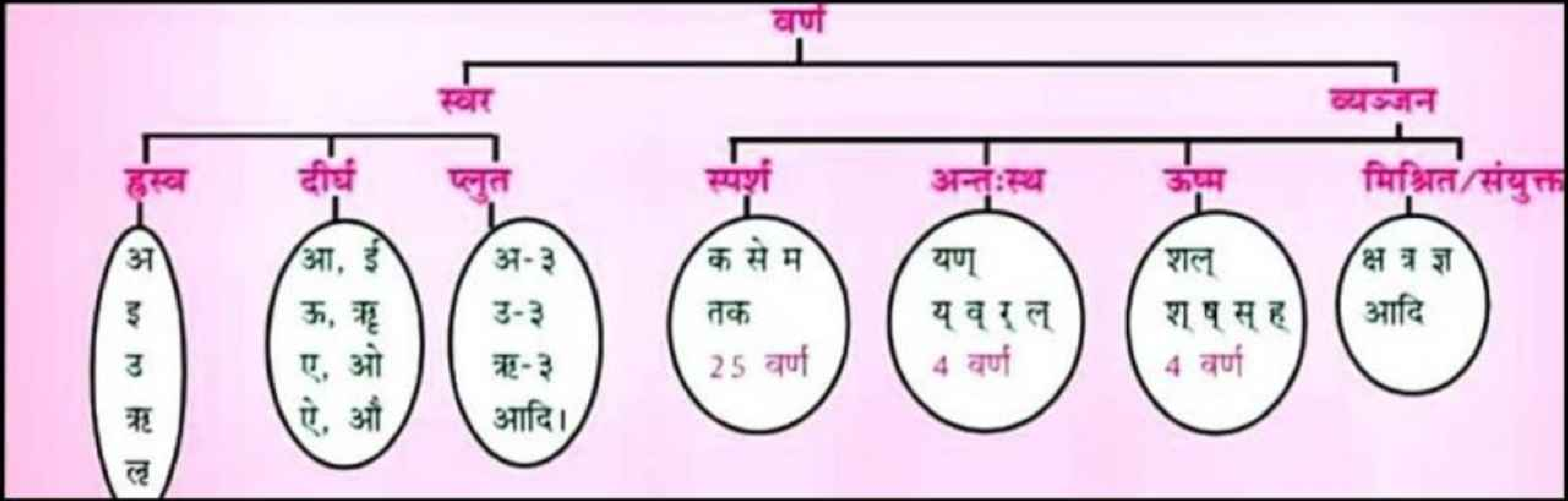

इत्संज्ञा करने वाला सूत्र-

हलन्त्यम् (1.3.3) उपदेशावस्था में जो अन्तिम हल् होता है, उसकी इत्संज्ञा होती है।

इत्संज्ञक वर्णों का लोप करने वाला सूत्र-

तस्य लोपः जिस वर्ण की इत्संज्ञा होती है, उसका लोप हो जाता है। इसीलिए 'अइउण्' में जो 'ण्' है ऋलृक् में जो 'क्' है इनकी "हलन्त्यम्" सूत्र से इत्संज्ञा होकर "तस्य लोपः" सूत्र से लोप हो जाता है। अतएव प्रत्याहार वर्णों की गिनती में इन इत्संज्ञक वर्णों की गिनती नहीं की जाती।

उपदेश क्या है "उपदेश आद्योच्चारणम् "

पाणिनि कात्यायन एवं पतञ्जलि ने जिसका प्रथम उच्चारण या प्रथम पाठ किया, उसे व्याकरणशास्त्र में 'उपदेश' कहा जाता है। यहाँ 'अइउण् ऋलृक् आदि चौदह सूत्रों को महर्षि पाणिनि ने महेश्वर के डमरू की ध्वनि को प्रथम बार उच्चारण किया अतः ये 14 सूत्र भी 'उपदेश' कहलाये।

भू आदि धातु, अइउण आदि सूत्र, उणादि सूत्र, वार्तिक, लिङ्गानुशासन, आगम, प्रत्यय, और आदेश, ये उपदेश माने जाते हैं। कहा भी गया है-

धातु-सूत्र-गणोणादि-वाक्यलिङ्गानुशासनम्।
आगम-प्रत्ययादेशा उपदेशाः प्रकीर्तिताः ।।

प्रत्याहार संज्ञा

प्रति + आङ् + हृ + घञ्
उपसर्ग धातु प्रत्यय

- ❖ प्रति आङ् हृ घञ्प्रत्याहारः
- ❖ 'प्रत्याहार' शब्द का अर्थ है- संक्षेपीकरण।
- ❖ "प्रत्याह्रियन्ते संक्षिप्यन्ते वर्णाः यत्र स प्रत्याहारः"
- ❖ जिनकी सहायता से कम से कम शब्दों में अधिकतम बात कही जा सके, उन्हें प्रत्याहार कहते हैं।

प्रत्याहार संज्ञा विधायक सूत्र "आदिरन्त्येन सहेता"

अन्त्य इत् वर्ण के साथ जो आदि वर्ण वह मध्यगामी सभी वर्गों का बोधक होता हुआ स्वयं का भी बोध कराता है। जैसे अण प्रत्याहार 'अइउण्' सूत्र के 'अ' से लेकर इत्संज्ञक वर्ण 'ण्' से मिलकर बना है जिसमें अ इ उ ये तीन वर्ण आते हैं।

इसीप्रकार 'इक्' प्रत्याहार अइउण, ऋलक् इन दो सूत्रों से बना है। यहाँ इ से लेकर क् के बीच के सभी वर्ण इ उ ऋ ऌ इक् प्रत्याहार में गिने जाते हैं।

प्रत्याहारों की संख्या- संस्कृत व्याकरण में कुल 42 प्रत्याहार हैं। कुछ विद्वान् 'र' और 'अम्' प्रत्याहार भी मानते हैं अतः इनके अनुसार प्रत्याहार 43 अथवा 44 हो जाते हैं।

प्रत्याहारों के विषय में कुछ विशेष जानकारी

❖ 'अच्' प्रत्याहार में समस्त स्वरवर्ण आते हैं, ये अइउण से ऐऔच् तक के चार सूत्रों से बना है। इसीलिए स्वरों को "अच्" भी कहा जाता है।

❖ 'हल्' प्रत्याहार में समस्त 33 व्यञ्जन वर्ण आते हैं, जो हयवरट् से लेकर हल् तक के 10 सूत्रों से बना है। इसीलिए व्यन्जनों को "हल्" भी कहा जाता है।

❖ 'झष्' प्रत्याहार में वर्गों के चौथे वर्ण (झ् भ् घ् ढ् ध्) आते हैं जो झभञ् और घढधष् इन दो सूत्रों से बना है।

❖ 'जश्' प्रत्याहार में वर्गों के तीसरे वर्ण (ज् ब् ड् द्) आते हैं, जो 'जबगडदश्' सूत्र से बना है।

❖ 'चय्' प्रत्याहार में वर्गों के प्रथम वर्ण (च् ट् त् क् प्) आते हैं।

❖ 'शल्' प्रत्याहार में चारों ऊष्मवर्ण (श् ष् स् ह्) आते हैं। जो शषसर् और हल् इन दो सूत्रों से बना है।

❖ 'यण्' प्रत्याहार में चारों अन्तःस्थ वर्ण (य् ल्) आते हैं। जो हयवरट् और लण् इन दो सूत्रों से बना है।

❖ अइउण् ऋलृक् एओङ् ऐऔच् आदि 14 सूत्रों के अन्त में जो ण् क् ङ् च् आदि हल् वर्ण लगे हुए हैं; इनका प्रयोजन प्रत्याहार बनाना है। जैसा कि कहा गया है,